

शायद सही
शायद गलत

डॉन बार्कर

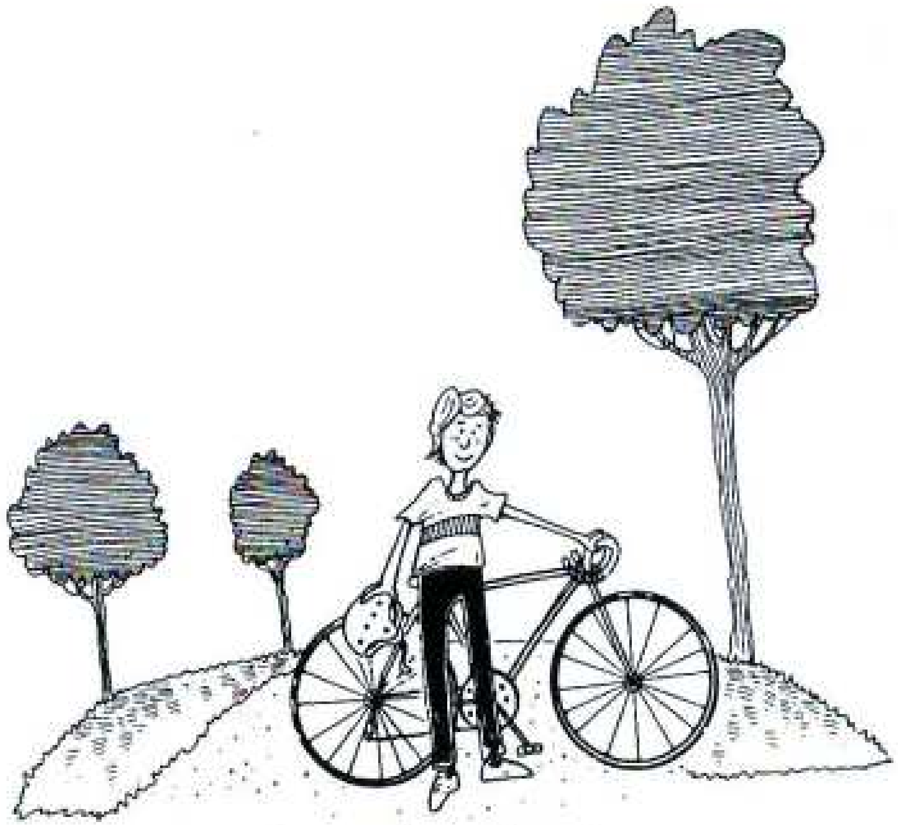
चित्रः ब्रायन स्ट्रैसबर्ग

हिन्दी अनुवादः अरविन्द गुप्ता

यह एनड्रिया है।

एनड्रिया होशियार है।

वो सही और गलत के बीच का फर्क करना सीख रही है।



एनड्रिया को पता है कि दुनिया में इंसान ही सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण होते हैं।





एनड्रिया कभी किसी को परेशान नहीं करती।

जब दुर्घटना में किसी को चोट लगती है तो उसे दुख होता है।



जब सम्भव होता है तब वो दूसरों का दुख दूर करती है।

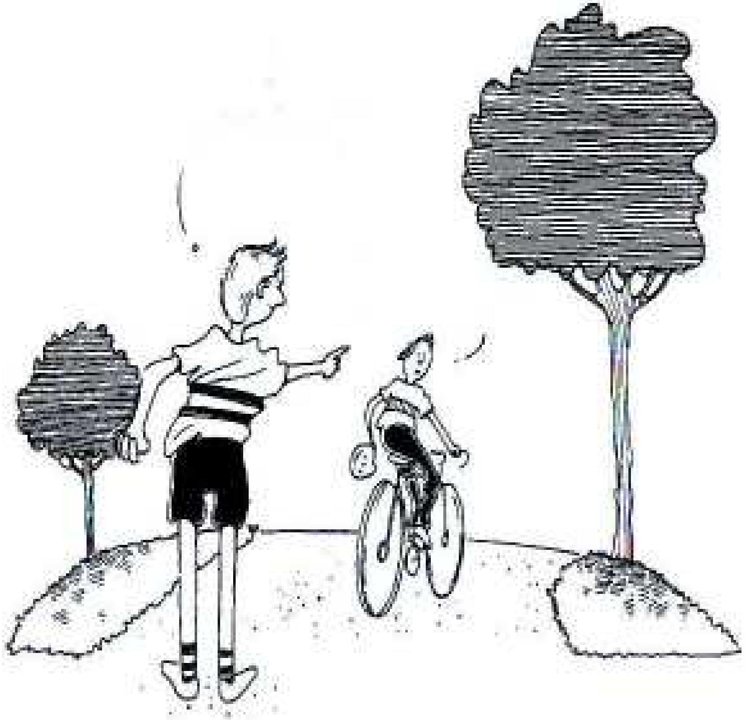




सही क्या है, गलत क्या है? यह एनड्रिया के अगले कदम पर निर्भर करेगा। उसकी कार्यवाही से दूसरों को फायदा हुआ या नुकसान।

उसे लड़ना सही नहीं लगता।

लड़ाई से नुकसान ही होता है। समस्या सुलझने की बजाए और उलझती है।



कुछ लोग सही और गलत चीजों के बारे में निर्णय लेने के लिए नियमों का इस्तेमाल करते हैं।

नियम एक प्रकार का आदेश होता है जिसका हर समय पालन करना पड़ता है।



सही क्या है, गलत क्या है इसके बीच में फर्क करने के लिए एनड्रिया सिद्धांतों का उपयोग करती है।

सिद्धांत सिर्फ एक विचार होता है, आदेश नहीं।

आपको क्या करना है सिद्धांत उसका निर्देश नहीं देता।

क्या करना है? सिद्धांत उसके बारे में सोचने का तरीका बताता है।



नियमों का उल्लंघन करना ठीक नहीं माना जाता है।

पर सिद्धांतों को तोड़ा जा सकता है।

कोई महत्वपूर्ण सिद्धांत दूसरे सिद्धांत को तोड़ सकता है।

अक्सर क्या करना है यह निर्णय कर पाना मुश्किल होता है।

एनड्रिया की बिल्ली एक दिन कार से टकरा गयी। एनड्रिया को अब एक कठिन निर्णय लेना था।





एनड्रिया दो सिद्धांतों के बीच में फंसी है। उसे समझ में नहीं आ रहा है कि वो कौन सा इस्तेमाल करे।



एक सिद्धांत के अनुसान जीवन लेना गलत है।

दूसरे सिद्धांत के अनुसार हमें दर्द को कम करना चाहिए।

दोनों ही सिद्धांत अच्छे हैं।

एनड्रिया को दूसरे सिद्धांत के पालन के लिए पहले का उल्लंघन करना पड़ेगा।

एनड्रिया को पहले सिद्धांत के पालन के लिए दूसरे का उल्लंघन करना पड़ेगा।

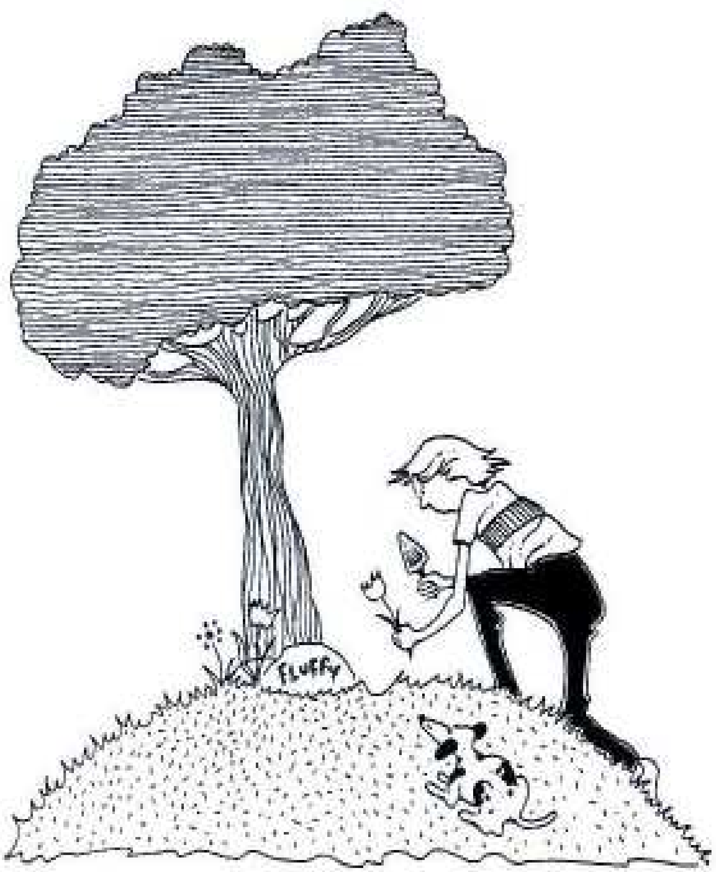
अब वो क्या करे?

अंतिम निर्णय से पहले वो उस मुद्दे के बारे में जितनी अधिक जानकारी सम्भव होगी वो इकट्ठी करेगी।



बहुत से लोग यह कठिन निर्णय लेते हुए नाखुश होंगे।

क्योंकि फल्फी ज्यादा जिंदा नहीं रहेगी इसलिए अधिकांश लोग दर्द कम करना ही जरूरी समझेंगे।



इस स्थिति में एनड्रिया क्या करे यह बताने वाला कोई नियम नहीं है।

उसे इस विषय पर गहराई से सोचना पड़ेगा।

उनके पीछे कौन से महत्वपूर्ण सिद्धांत हैं उनके बारे में सोचना पड़ेगा।

अंतिम निर्णय लेने से पहले उसे सारी जानकारी एकत्रित करनी पड़ेगी।

अगर मुद्दे ही अलग होते तो शायद वो कोई दूसरा निर्णय लेती।

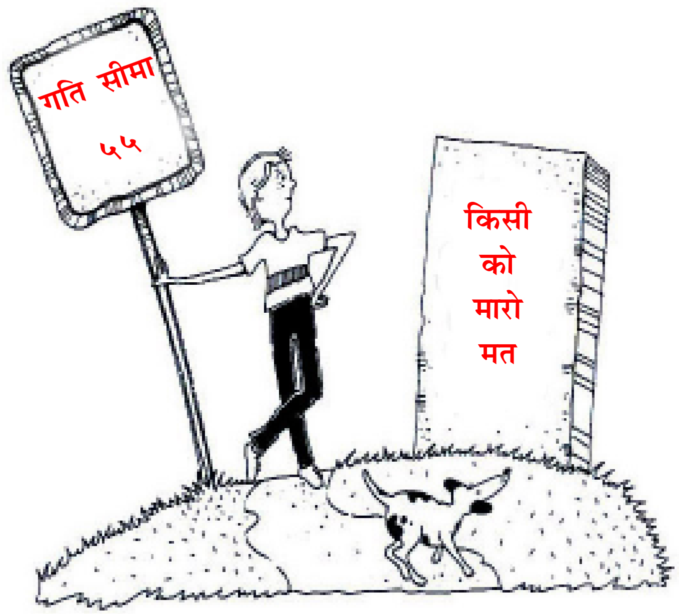
सिद्धांत नियमों से ज्यादा जरूरी होते हैं।

नियमों का पालन करते वक्त ज्यादा सोचना नहीं पड़ता है परन्तु सिद्धांतों पर गहराई से विचार करना पड़ता है।

नियम कोई सत्ताधारी व्यक्ति बनाता है जैसे - मां-बाप, शिक्षक, मालिक, राजा या फिर सरकार।

सरकार द्वारा बनाए नियमों को कानून कहा जाता है।

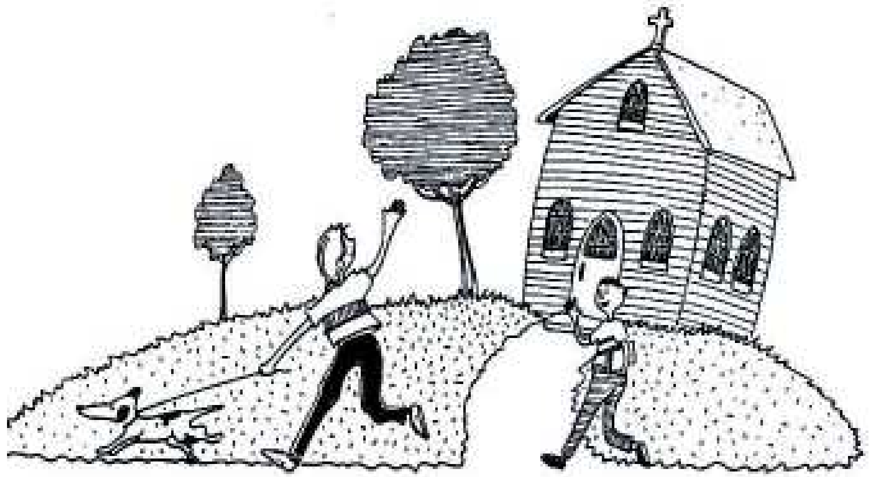
धार्मिक नियमों आदेश कहलाते हैं।



कुछ अच्छे लोग भगवान में विश्वास करते हैं।

पर कई भले लोग भगवान में विश्वास नहीं करते।

सही और गलत के बीच का अंतर समझने के लिए हमें भगवान की बजाए इंसानों के लिए क्या बेहतर है यह जानना जरूरी है।



मनुष्य प्रकृति का अंग है।

हम लोग प्रकृति से बेहतर नहीं हैं।

मनुष्य एक विशेष प्रकार का प्राणी है।

क्योंकि हम प्रकृति का अंग हैं इसलिए हमें इंसानों के साथ-साथ समस्त प्रकृति का भी आदर करना चाहिए।

इसमें वो सभी जीव और प्राणी शामिल हैं जो हमारी दुनिया में रहते हैं।



आप जो कुछ भी काम चुनेंगे वो महत्वपूर्ण होगा।

एक अच्छे, सेहतमंद और खुशहाल जीवन के लिए अपने काम को संभाल कर चुनें।

इसको नैतिकता भी कहते हैं।

नैतिकता के आधार पर ही हम सही-गलत, अच्छे-बुरे, बेहतर और खराब कामों का मूल्यांकन करते हैं।

नैतिकता होने का मतलब है अच्छे सिद्धांतों में विश्वास करना।

अच्छे सिद्धांतों का पालन करते समय आपको कई बार वो काम भी करने पड़ेंगे जो आपको नापसंद हों।

आप उन्हें इसलिए करेंगे क्योंकि वो वाकई में करने लायक हैं।



यह जरूरी नहीं है कि हरेक नियम सही ही हो।

अगर नियम को किसी अच्छे सिद्धांत के आधार पर समझाया जा सके तो नियम अच्छा भी हो सकता है।

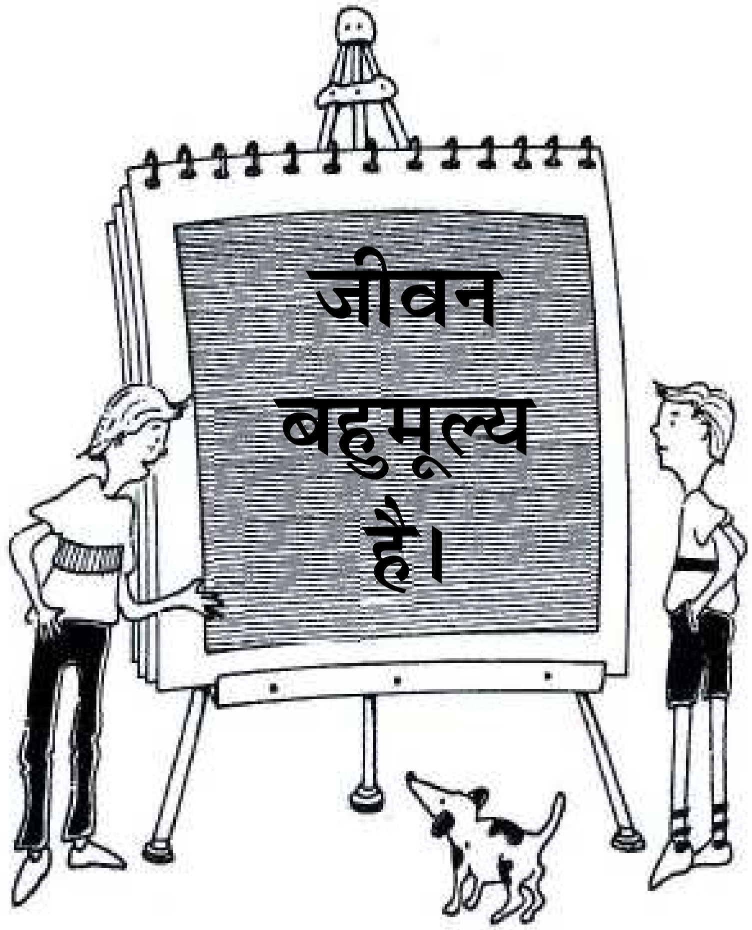
बहुत से नियम और कानून अच्छे भी होते हैं।

अगर नियम अच्छे सिद्धांत पर आधारित नहीं है तो वो बेकार और फालतू भी हो सकता है।



सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांत है

जीवन बहुमूल्य है।



हम कभी किसी जीव को चोट नहीं पहुंचायें।

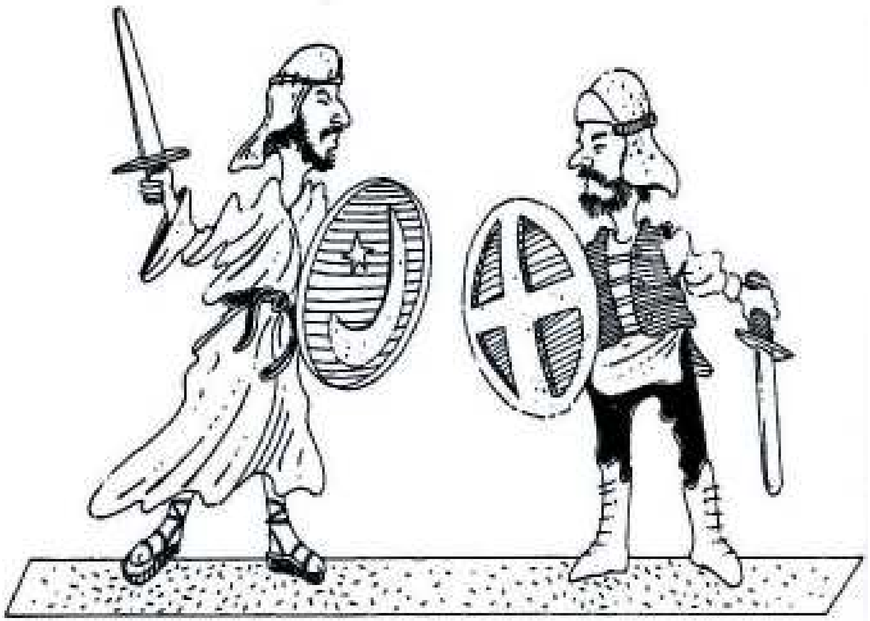
हम कभी किसी मनुष्य को चोट नहीं पहुंचायें।

हम कभी स्वयं को भी चोट नहीं पहुंचायें।

कुछ लोगों के अनुसार हत्या करना इसलिए गलत है क्योंकि भगवान और सरकार ने कहा है: ‘तुम्हें हत्या नहीं करना चाहिए।’

पर अगर कुछ लोग हत्या न करने का आदेश मानेंगे तो कुछ लोग हत्या करना का आदेश भी मानेंगे।

युद्ध में लोग अक्सर लाखों हत्यायें इसलिए करते हैं क्योंकि उन्हें यह भगवान का दिया आदेश लगता है। यह सरासर गलत है।



अगर सम्भव हो तो हमें दूसरों का दर्द कम करना चाहिए।

अगर हमें किसी को कष्ट देना ही है तो हम उसे कम-से-कम तकलीफ दें।

अच्छे लोग कभी लड़ते-झगड़ते नहीं। पर कभी खुद की सुरक्षा के लिए लड़ना भी पड़ता है, या फिर किसी अन्य व्यक्ति की सुरक्षा के लिए लड़ना पड़ता है।

अगर किसी को मजबूरी में कष्ट देना ही पड़े तो उसे कम-से-कम तकलीफ दें। एक अच्छे इंसान को किसी दूसरे को कष्ट देने में मजा नहीं आता है।



दूसरा सिद्धांत:

दूसरों के अधिकारों का आदर करें।



आपको हरेक व्यक्ति से प्रेम करने की जरूरत नहीं है।

आप हरेक को चाहें यह भी जरूरी नहीं।

आप हरेक का आदर करें यह भी जरूरी नहीं।

पर आप हरेक व्यक्ति के अधिकारों का सम्मान अवश्य करें।

कुछ मानवीय अधिकार हैं:

भोजन, कपड़ा और घर के अधिकार।

विचारों और विश्वासों का अधिकार।

विचारों और विश्वासों को व्यक्त करने का अधिकार।

निजी गोपनीयता (प्राईवेसी) का अधिकार।

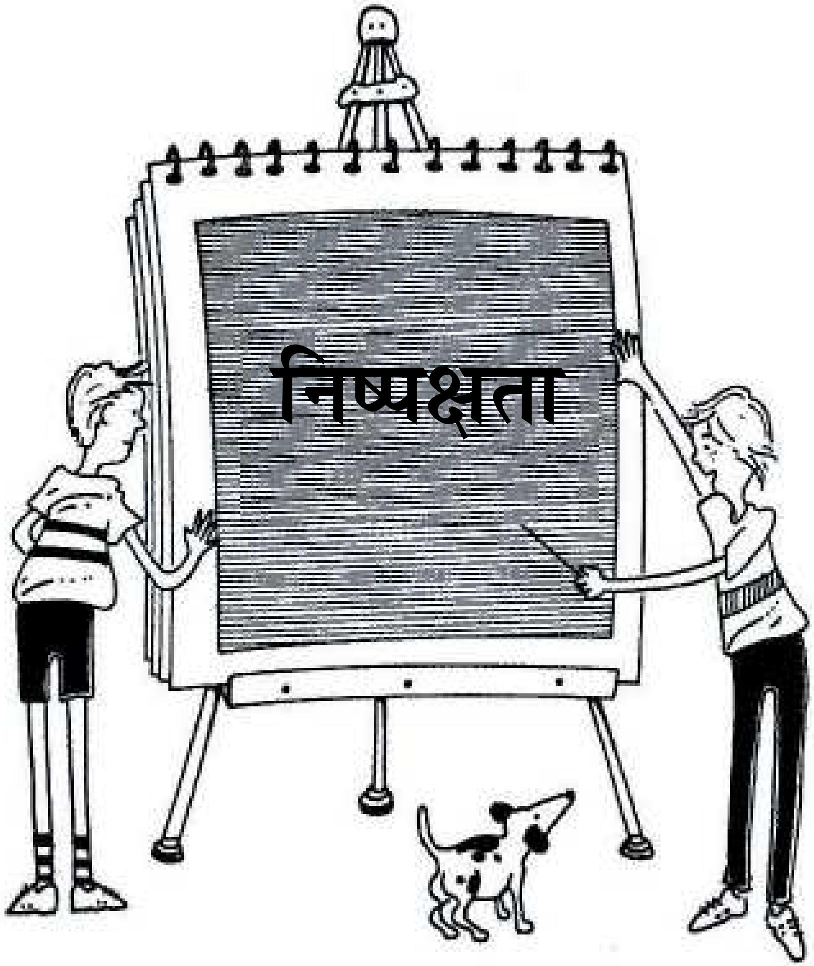
स्वतंत्रता का अधिकार।

उदाहरण के लिए अगर आप किसी को कानून तोड़ते हुए पकड़ भीं, तो भी आपको उसे मारने का कोई हक नहीं है।



एक अन्य अच्छा सिद्धांत है:

हरेक के साथ अच्छा, निष्पक्ष व्यवहार करना।



निष्पक्षता का मतलब है हरेक को समान मौका या मात्रा मिलना।

निष्पक्षता का मतलब है कि अलग-अलग भिन्न प्रकार के लोगों के साथ समान व्यवहार करना।



निष्पक्षता का मतलब है कि लड़कों और लड़कियों के साथ एक-जैसा व्यवहार करना।

इसका मतलब है औरतों और मर्दों के साथ भी एक-जैसा व्यवहार करना।



इसका मतलब है अगल-अगल रंग के लोगों के साथ भी एक-समान व्यवहार करना।

और अलग-अलग धर्मों के लोगों के साथ भी समान बर्ताव करना।

निष्पक्षता का मतलब है किसी इंसान की मजाक नहीं उड़ाना क्योंकि वो बदसूरत है।

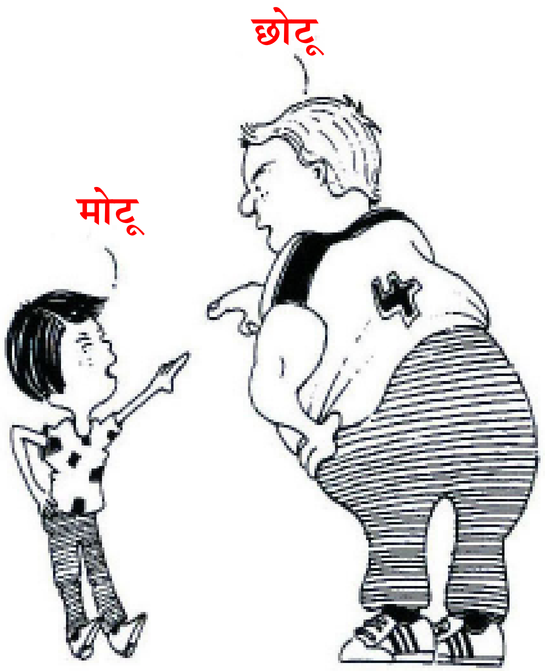
क्योंकि उसका वजन अथवा ऊंचाई कम-ज्यादा है।

उसकी उम्र के कारण।

उसके विकलांग होने के कारण।

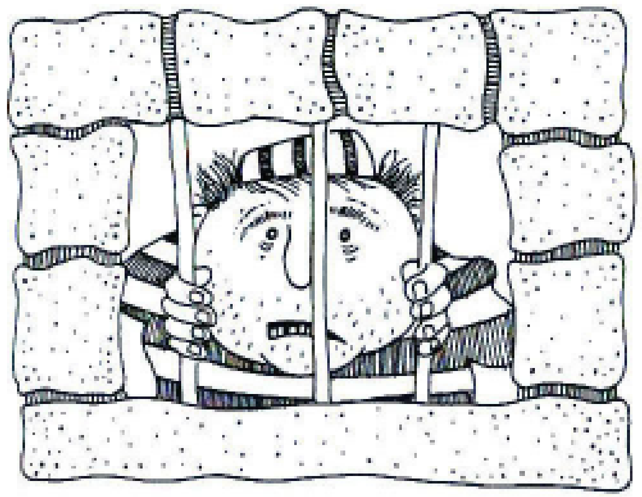
क्योंकि वो किसी दूसरे देश का है।

या फिर उसके गरीब या अमीर होने की वजह से।



लोगों के साथ अलग व्यवहार तभी करें जब वो कानून तोड़ें या फिर वो किसी को चोट पहुंचायें।

अगर कोई कानून तोड़े या फिर अन्य किसी को चोट पहुंचाये तब उनके साथ ऐसा बर्ताव करें जिससे वो अपना रवइया बदलें। या फिर उसे अलग रखें जिससे वो दूसरों को चोट नहीं पहुंचा पायें।



एक और सिद्धांत है:

हमेशा सच बोलने की कोशिश करें।



कोई चीज गलत है यह जानने के लिए आप खुद से पूछें, 'क्या मैं इसे किसी को बताना चाहूंगा।'

अगर आप उसे छिपा कर रखना चाहते हैं तो शायद आपकी कार्यवाही गलत हो सकती है।

अगर कोई वयस्क आपसे किसी बात को छिपा कर रखने को कहे तो उसका मतलब है कि वो वयस्क कुछ गलत कर रहा है।

उदाहरण के लिए अगर कोई वयस्क आपको किसी गलत जगह छुए तो यह बात गलत है। वो आपके शरीर के अधिकार का उल्लंघन कर रहा है।

सब गुप्त बातें गलत नहीं होती हैं। अगर तुम किसी को आश्चर्य में डालने के लिए कोई पार्टी दे रहे हो, तो इस बात को छिपा कर रखने में कोई गलती नहीं है।

पार्टी किसी को नुकसान नहीं पहुंचती!



कभी-कभी बहुत ईमानदारी भी नुकसानदेय होती है। मिसाल के लिए जब कोई बुरा इंसान तुम्हें या किसी अन्य व्यक्ति को चोट पहुंचाना चाहता हो।

यह किसी सिद्धांत को तोड़ने का एक अच्छा उदाहरण है।

मानो तुम्हारे घर कोई महिला छिपने के आती है लिए क्योंकि उसका पति उसे बहुत पीट रहा है।

और तुम उसे छिपने की इजाजत दे देते हो।

अगर उसका पति तुम्हारे घर आकर पूछे कि वो कहां छिपी है, तो क्या तुम सच बोलोगे?

कभी-कभी झूठ बोलना भी अच्छा होता है।

यहां पर एक महिला की जिंदगी बचेगी। किसी की जिन्दगी बचाना सच बोलने के सिद्धांत से बेहतर है।

दूसरों के साथ धोखाधड़ी करना भी गलत बात है।

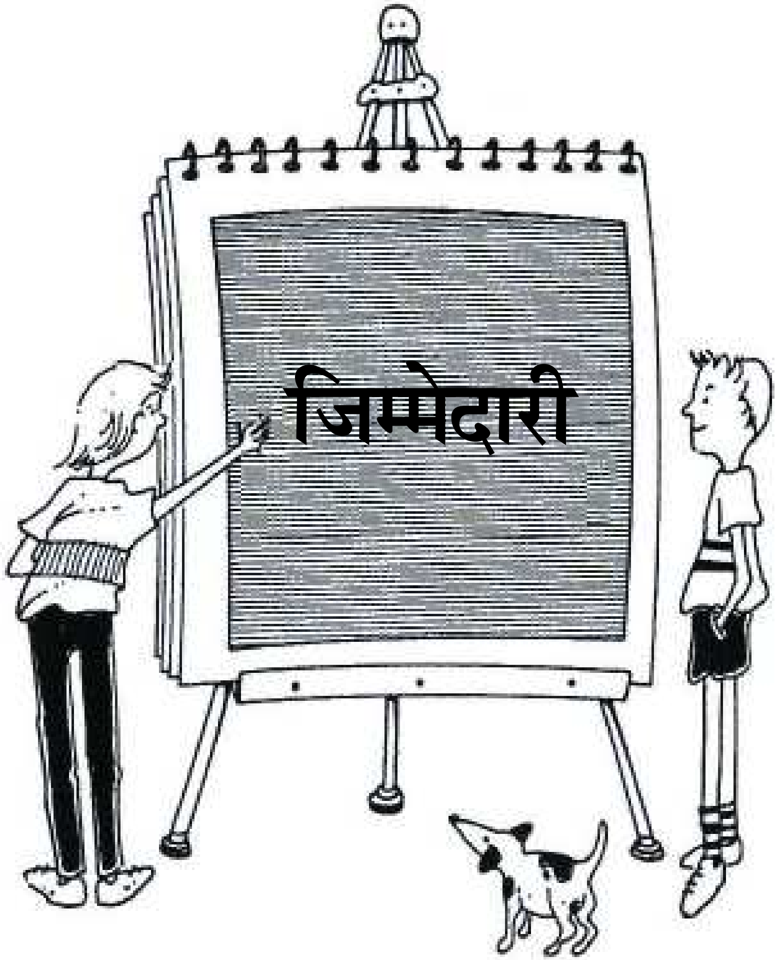
धोखाधड़ी करना बेईमानी है।

धोखाधड़ी से दूसरों को नुकसान हो सकता है।



एक बहुत महत्वपूर्ण सिद्धांत है:

जिम्मेदारी से काम करना।



जिम्मेदारी का मतलब है कि अपनी जिंदगी की सभी चीजों की अच्छी देखभाल करना।

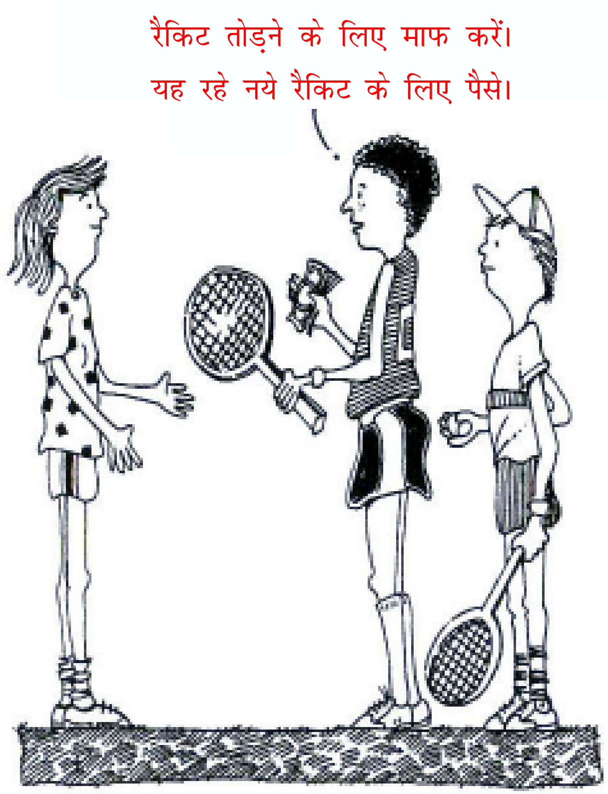
ऐसा न हो कि इन चीजों की देखभाल का जिम्मा तुम किसी और को सौंप दो।

अगर तुम किसी चीज को करने का जिम्मा लो, तो उसे जरूर करो।

अगर आप कोई वादा करें, तो उसे निभायें।

अगर किसी को चोट पहुंचायें तो माफी मांगें और कष्ट पहुंचाना बंद करें।

अगर आप कोई चीज तोड़ें तो उसकी मरम्मत करें और उसकी कीमत चुकायें।



जिन्दगी में चीजें मुफ्त नहीं मिलती हैं।

अच्छे लोग अपने हिस्से की चीजें पाने के लिए मेहनत करते हैं।

जीवन में महत्वपूर्ण क्या है इसे कभी न भूलें।

चीजों की देखभाल करना भूलना गैरजिम्मेदारी है।

अगर आपसे कोई गल्ती हो जाए तो उसे ठीक करने की कोशिश करें।

एक अन्य महत्वपूर्ण सिद्धांत है:

दूसरों के प्रति दयालु हों।



किसी काम को करने से पहले अपने आप से एक सरल सवाल पूछें:

‘क्या काम दयालुता का है?’

‘क्या दूसरे लोग मेरे काम की प्रशंसा करेंगे?’

‘क्या मैं इससे कुछ और बेहतर काम कर सकता था?’

अगर आप किसी को चोट नहीं पहुंचा रहे हैं और सही व्यवहार कर रहे हैं तो फिर स्वार्थी होने में कोई गलती नहीं है।

तमाम भले लोगों को दूसरों के साथ अच्छा व्यवहार करना अच्छा लगता है।

अच्छे लोगों को दूसरों की मदद करने में हमेशा आनंद मिलता है।

लोगों को खुशी पहुंचाने में अच्छे लोगों को अपार आनंद मिलता है।

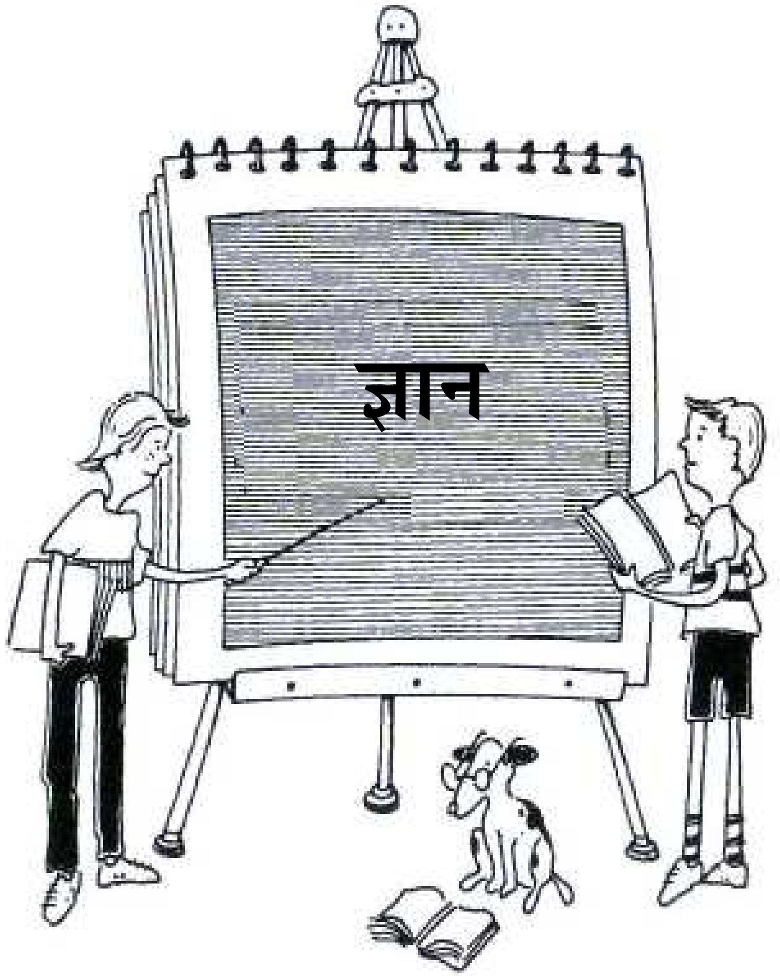


कुछ लोग इसलिए दयालु होते हैं क्योंकि वो दूसरों से भी अच्छे व्यवहार की अपेक्षा करते हैं। इसे 'सुनहरा नियम' कहते हैं और यह एक खराब नियम नहीं है।

कुछ लोग दूसरों के साथ दयालुता का व्यवहार इसलिए करते हैं क्योंकि वो लोगों को सबसे बहुमूल्य मानते हैं। वो ईनाम की लालसा से ऐसा नहीं करते।

एक और अच्छा सिद्धांत है:

जितना सम्भव हो सके उतना ज्यादा ज्ञान हासिल करें।



सही जानकारी के अभाव में आप सही निर्णय भी नहीं ले पायेंगे।

सही या गलत का निर्णय लेने से पहले आप अपनी कार्यवाही के असर के बारे में जरूर विचार करें।

हो सकता है कि उससे किसी को चोट पहुंचे।

हो सकता उससे किसी की मदद हो।

हो सकता है उससे ऊपर की दोनों बातें हों।

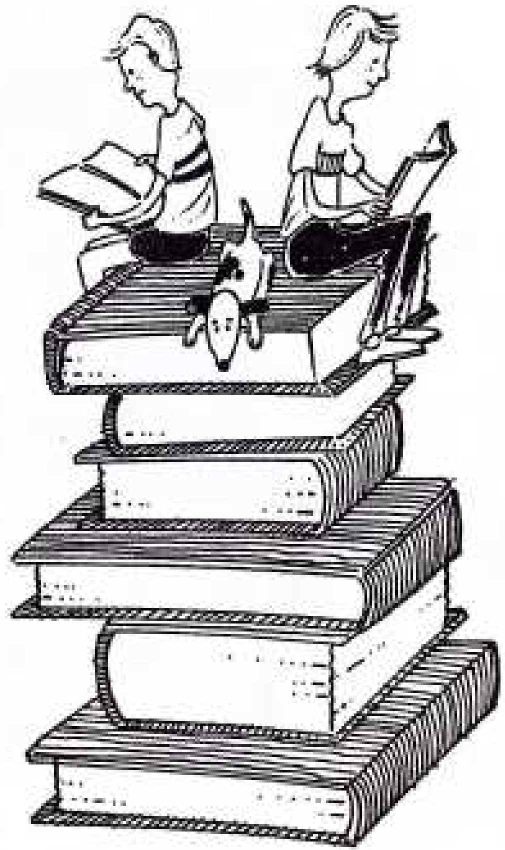
हर बार जब आप कुछ भी करेंगे उसके कुछ दूरगामी परिणाम भी होंगे।

कार्यवाही का क्या असर नहीं मालूम होने पर आप सही निर्णय भी नहीं ले पायेंगे।

स्कूल जरूरी है।

पढ़ना और सीखना भी आवश्यक है।

आप जितना अधिक जानेंगे आपके लिए उतना ही अच्छा होगा।



एक मजेदार सिद्धांत है:

जिन्दगी का लुत्फ उठायें!



इस पृथ्वी पर आपके साथ हर व्यक्ति को भरपूर जीवन जीने और आनन्द लेने का अधिकार है।

हम एक ही जिन्दगी जीते हैं।

बेफालतू और उबाऊ काम करने की बजाए आप खुद अपना और सहयोगियों का जीवन आनन्ददायी बनाने का प्रयास करें।

चोट पहुंचाने वाले लोगों के रहते भले लोगों का जीना मुश्किल हो जाता है।

कोशिश करें कि अन्य लोग भी जीवन का आनन्द ले सकें।



अगर आपके काम के फलस्वरूप लोग जीवन आनन्द से नहीं जी पा रहे हों तो शायद आपके काम में ही कुछ खोट हो।

अगर आप अपने काम की वजह से जिन्दगी का मजा नहीं लूट पा रहे हैं तो फिर आपके काम में ही कुछ कमी हो सकती है।

ज्यादातर लोग खेल, आराम, मनोरंजन, फिल्म, खेलकूद और अन्य आनन्ददायी चीजों का मजा लेते हैं। लोगों को अलग-अलग चीजों में मजा आता है।

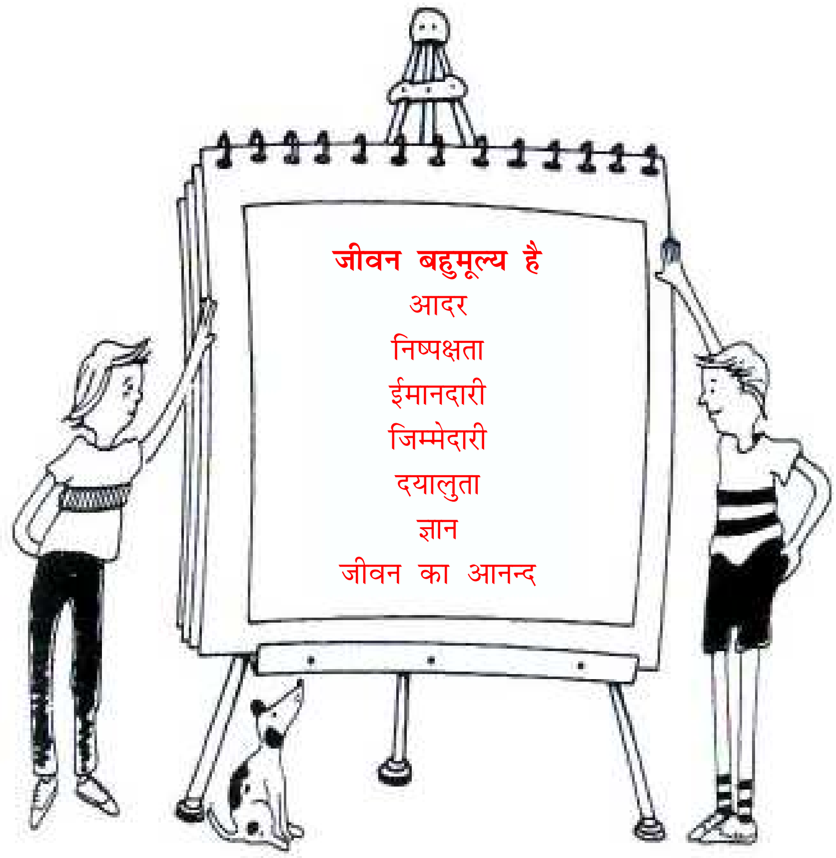
कुछ लोगों को चर्च या मंदिर में पूजा करने में मजा आता है।

कुछ लोगों को पूजा करने में बिल्कुल मजा नहीं आता है।

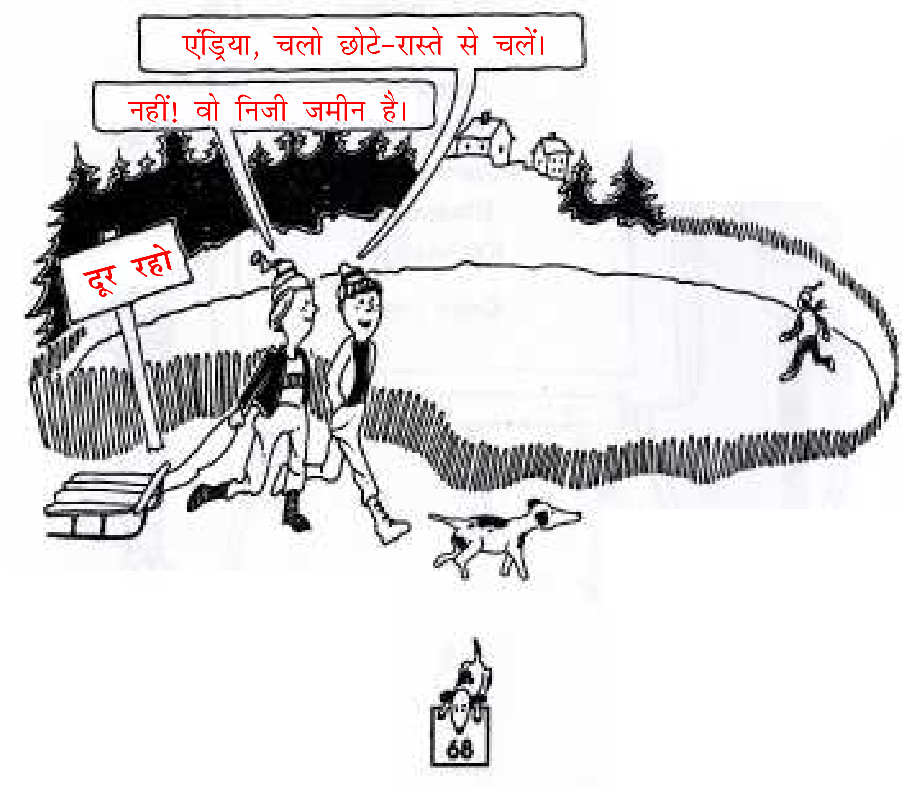
पर सभी नेक लोग एक बात पर सहमत होंगे कि हरेक को उसकी मनमर्जी के अनुसार जीवन जीने का अधिकार होना चाहिए।

भिन्न होने के बावजूद भी हम एक-दूसरे के साथ मिलजुल कर रह सकते हैं।

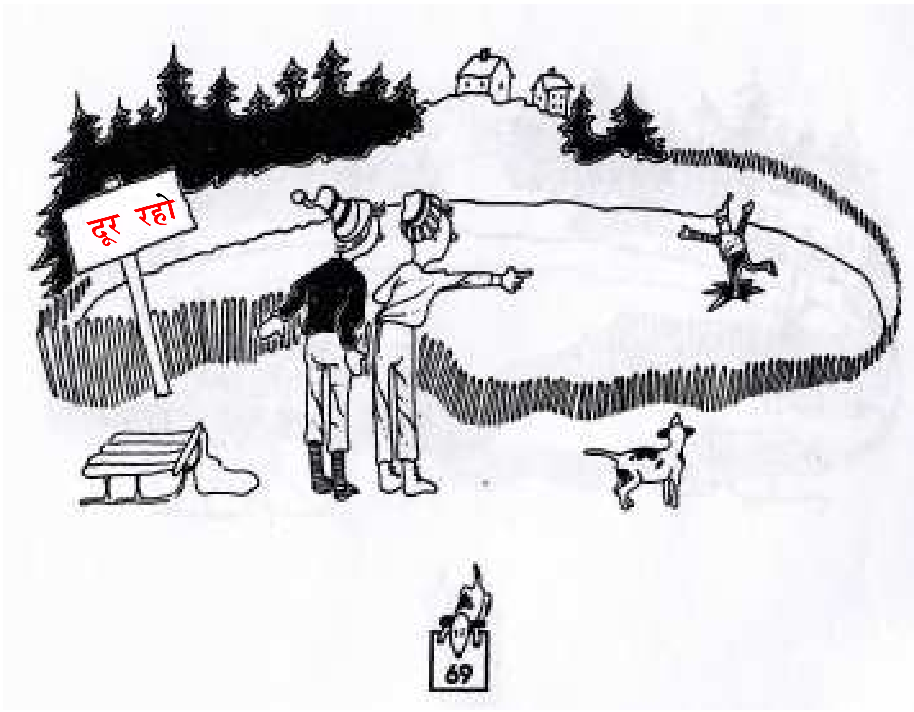
इन सिद्धांतों का उपयोग करने से आपको सही और गलत के बीच निर्णय लेने में आसानी होगी।

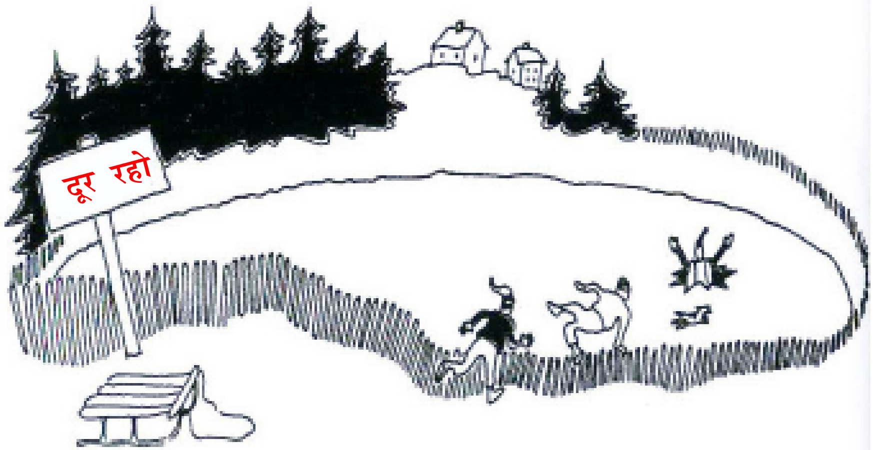


क्या सही है? यह जानना अक्सर काफी आसान होता है।

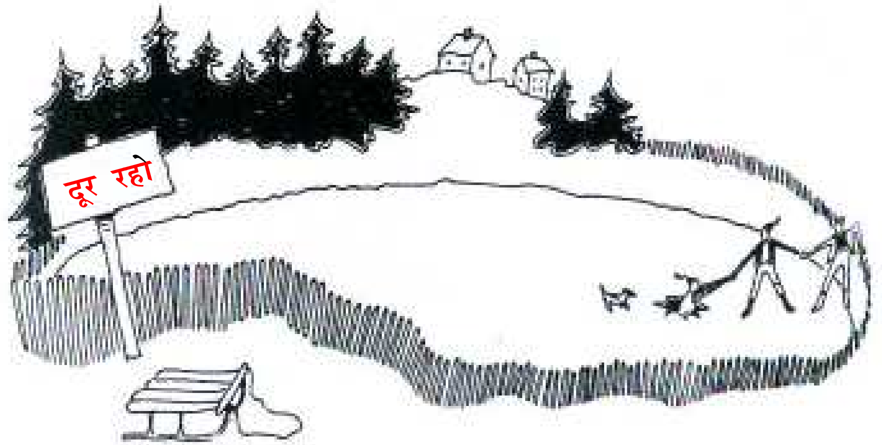


कई बार सही निर्णय लेना मुश्किल होता है – क्योंकि आपके काम द्वारा किसी नियम या सिद्धांत का उल्लंघन होता है।





70



71

कभी-कभी दूसरों की सहायता करने के लिए आपको नियम तोड़ना पड़ेंगे।

एक महत्वपूर्ण सिद्धांत की पूर्ति के लिए किसी नियम को तोड़ने में कोई गलती नहीं है।



कई बार सही काम क्या है यह निर्णय लेना बहुत मुश्किल हो जाता है।

अक्सर कोई सही रास्ता नहीं होता है।

फिर हमें दो **गलत** चीजों के बीच में से एक को चुनना पड़ता है।

अगर आपको दो गलत चीजों के बीच में एक को चुनना पड़े तो आप सोच-विचार कर उसमें से बेहतर चीज को चुनें। दोनों में से एक चीज शायद कुछ बेहतर हो।

दो गलत चीजों में से कम गलत चीज को चुनना एक अच्छा निर्णय होगा।

अगर आप कुछ भी नहीं चुनेंगे तो आप सबसे खराब चीज को सफल बनाने में सहायक होंगे।



कई बार क्या करना है यह समझ में नहीं आता है।

अगर कभी ऐसा मौका आए तो आप सिद्धांतों की मदद से सही और गलत के बीच निर्णय लें।

एनड्रिया जैसे तुम भी बहुत होशियार हो।

तुम सोच-विचार कर सिद्धांतों के आधार पर आसान से यह निर्णय ले सकते हो कि कोई काम सही है या गलत।



शायद सही, शायद गलत बच्चों के सोचने की क्षमता की पुष्टि करती है। बच्चे जानकारी एकत्रित कर पूछ सकते हैं 'क्यों?' तर्क तथ्यों पर और गहरे सोच पर आधारित हो सकता है। इसके लिए धार्मिक ग्रंथों की जरूरत नहीं पड़ेगी। पुस्तक की प्रमुख पात्र एनड्रिया नैतिकता के अनेकों बहुमूल्य पाठ सीखती है। पर उसकी सबसे प्रमुख सीख है - आपकी चाहें कोई भी मान्यता हो फिर भी आपको दूसरों के मानवीय अधिकारों का सम्मान करना ही चाहिए। सुन्दर चित्रों और बहुत पठनीय शब्दों में **शायद सही, शायद गलत** बच्चों को बहुत सहजता से नैतिकता के सिद्धांतों का बोध कराती है।

डैन बार्कर एक लेखक, शिक्षक और संगीतज्ञ हैं।

